आरती कुसुंमाञ्जली

श्री मनोहर पीठाधीश्वर योगीराज बलवन्तगिरिजी
मंगलगिरिजी महाराज (लुणावाड़ा अखाड़ा)

आशां विहाय परित स्वजनीय चित्तान ।
ज्ञानावलम्बय स्वपुरूप दण्ड पृतम ।।
उपदेशयन्ति स्वजना प्रिय शिष्य भक्तान ।
बलवन्तनाथ गिरि पादमहं नमामि ।।

प्रकाशक :

थानापती रघुनाथगिरि

श्री गुरु बलवन्तगिरिजी

श्री बापेश्वर महादेव : करमसद

ता. आणंद, जि. खेड़ा.

(गुजरात)

प्रतियां : २,०००

संवंत् २०३० महा शिवरात्री

सन् १९७४.

मूल्य : सदुपयोग

मुद्रण स्थान :

श्री सुरेषचंद्र चीनुभाई पटेल

श्री शंकर प्रिन्टिंग प्रेस,

श्री बापेश्वर महादेव पासे,

करमसद. वाया. आणंद.

॥ अथशिवताण्डवस्तोत्रम्ः ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजंङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन् निलिंपनिर्झरी—
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥

धराधरेन्द्रनंदिनीविलासवंधुवन्धुर—
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगंवरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा—
कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिंधुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर—
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनंजयस्फुलिंगभा-

निपीतपंचसायकं नमन्निलिंपनायकम् ।

सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरम्

महाकपालिसम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल—

द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-

प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-

त्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।

निलिंपनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः

कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा—

वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी—

रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं

गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस—

द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।

धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल—

ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो—

र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।

तृणारविंदचक्षुषो प्रजामहीमहेन्द्रयोः

समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२॥

कदा निर्लिंपनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्

विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन् ।

विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः

शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं

पठन्स्मरन्ब्रुवन् नरो विशुद्धिमेति संततम् ।

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं

विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ॥१४॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं

यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।

तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां

लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१५॥

हमारा नमन

वहे जटा अरण्य से पवित्र धार गंगकी ?
गले भुजंग राजमाल लम्बिता विराजती ।
वजाय डम्म डम्म डम्म डम्मनाद डम्म जो ?
प्रचण्ड ताण्डवै करें उन्हे नमन् हमार है ॥१॥
जटा कडाहमें तरंग गंगकी सुशोभती ?
विलोल बोल बोलती समीर नीर संगसे ।
विशाल भाल अग्नि नेत्र धक्धके ललाटमें
द्वितीय चन्द्रधार जो उन्हें नमन् हमार है ॥२॥
दिशा प्रकाशतीं उमा विशाल रंग अंगसे ?
जिसे निहारके महेश चित्त मोद मानता ।
कृपा कटाक्ष मात्रसे विपत्ति भक्तकी हरें ?
असंग जो दिगम्बरी उन्हे नमन् हमार है ॥३॥
भुजंग झांकते जटानसे मणी लिये हुए ?
दिशा वधूटियान अंग राग सालगार हे ।
महा मदान्ध झूमता गजेद्र चर्म धारि जो ?
विचित्र नाच नाचते उन्हे नमन हमार है ॥४॥
सहस्र लोचनादि शीश पादमें नमावते ?
प्रसून धूलिरंजिता भई महेश पादुका ।
जटा सवांरि वांध जो भुजंग राज मालसे ?
सुधार भक्त कार्य जो उन्हे नमन् हमार है ॥५॥

ललाट वेदिकाग्नि ज्वालसे जराय मारजो ?

नमे सुरेन्द्र भी शदैव जासु साखि पायके ।

विशाल भाल चन्द्रमा कला जटा सुभावता ?

अभीष्ट दान जो करें उन्हे नमन् हमार है ॥६॥

कराल भाल यज्ञ ज्वाल धक्क धक्क धक्कक्के ?

प्रचण्ड कामदेव आहुती वना हवन किया ।

शिवा विहार चित्रकार विश्वका विचित्र जो ?

त्रिनेत्र विश्वनाथ जो उन्हे नमन् हमार है ॥७॥

नवीन मेघमण्डली अमावसी निशार्ध में ?

घिरी गले अंधेरिश्याम गौरको शुभावती ।

सुगंगधार ही नहीं अखण्ड विश्वभार जो ?

धरें सुधार कार्य भी उन्हें नमन् हमार है ॥८॥

समूह श्यामवारि जात सा खिला हुआ यथा ।

मृगी शरीर सा विचित्र चित्र कण्ठ देशमें ।

समूलकाम आदि शत्रुका विनाश जो करें !

महान दुःख जो हरें उन्हें नमन हमार है ॥९॥

उमा कला सवांरतीं अनेक रंगरंगकी !

कला कदम्ब राग गन्ध में निमग्न जो रहें ।

विपत्ति टारि भक्तकी पदार्थ चारि देत जो !

उमा विहारि गंगधारिको नमन् हमार है ॥१०॥

भुजंग फूंक से ललाट नेत्र ज्वाल फैलती !

महान वेग से महान ईश शीश जो फिरे

धमक्रु धमक्रु धमक्रू मृदंग तालसे मिलाय जो !

प्रचण्ड ताण्डवै करें उन्हे नमन् हमार है ॥११॥

पषाण पान धाम धान क्षार हार सुन्दरी !

मणी महीश कीश सिंह सांप या छछुन्दरी ।

प्रधानशत्रु मित्रमें समान भाव लायके !

जिसे ऋपीमुनी मिलैं उन्हे नमन् हमार है ॥१२॥

लता निकुञ्जमें गुफा समीप गंगनीरका ?

प्रवाह झर्झरे जहां नमः शिवाय मन्त्रको !

जप अहो प्रभू कभी हृदयविकार त्यागिके !

सुने हृदै पुकार जो उन्हे नमन् हमार है ॥१३॥

जपो नमः शिवाय मन्त्र ध्यान शंम्भुका धरो !

चढ़ायनीर गंगका त्रिपुण्ड भस्म का करो ।

उमाविहारिकी पुकार सुद्धचित्तसे करो !

विशुध्ध प्रेम पुञ्ज जो उन्हे नमन् हमार है ॥१४॥

अहो गुरू जहानके न भूलिये मुझे प्रभु !

लबार हूं विचार हीन ज्ञान रंक जानिकै ।

मलीन बुद्धिवाल आपको पुकारता प्रभो !

अभेद वेद सार जो उन्हे नमन् हमार है ॥१५॥

पूजा समाप्ति पर रावण शंभु गाथा

जो थी कही स्वमतिके अनुसार सो ही ॥

भाषा प्रबन्ध रघुनाथगिरिः अजाना !

गावो महेश मन देखहिं प्रेम टोई

यमुना तटश्याम चढ़े झुलना
वृज नारिन संग विहार करैं ॥ टेक ॥
कुटिलाकृति केश लटा बिखरी।
हरि पीठ मिलाप चहै मन में ॥
हनि पैंग हिंडोल वहैं नभमें।
पद पैंजनियां झनकार करें ॥ १ ॥
सुचि कोकिल वैन गवालिनियां
करिगानरिझाय रहीं हरिको।
धन हैं वृजकी वह गूजरियां
सुख सागरको सुख दान करें ॥ २ ॥
सिखि पंख सुहावनि पागधरे।
झुमका लटकैं गजमोतिनके।
तिलकायत पीत ललाट लसै।
भृकुटी भय नाशक चित्त हरे ॥ ३ ॥
नयनामृत कानन गालनका
अधरोष्ठ धरी मुरली टहुके
नखसे सिख अंग ललाम सबै
अँग अंगन कोटिन काम भरे ॥ ४ ॥
रविरुद्र लखें संग देवन के
नहिंनैन थकैंन परैं पलकैं
रघुनाथहु वाट निहारि रह्यो
अरजी मरजी हरि पास करें

હરિ હીર હિંડોલ્લ ચઢી ઝુલ્લતા
શિશુ મંડલ સંગ હુલાસ ભરયા
શિવહે શિવહે શિવહે શિવહે
જપતા હરિ હેત ધરી શિવને ॥ટેક॥

યમુના મનમાં મલકાય ઘણી
જડ છું પણ પૂરણ બ્રહ્મ જડ્યો
મહિભાર વધ્યો હલકો કરવા
જપતા હરિ શમ્ભુ સનાતન ને ॥ ૨ ॥

યમુના ગહરી ાગચ્ચ ઝાડ ઘણા
જલ નીલમણી સરખો ચળકે
સહુ મન્ડલ હીરહિંડોલ છટા
હંસતા હરિ ચોરિ જતા ચિતને ॥ ૩ ॥

જલમાં પ્રતિબિંબ કદંબનના
નભના હરિ હીર હિંડોલનના
મુરલી મુખ મણ્ડિત પીતપટો
ચમકાર કરે વન કાનનને ॥ ૪ ॥

યમુના જલ અંજુલિમાં ભરિને
સખિયો મન મોદ મહાન થવા
છિડકી ઠકકાર કરી હંસતા
રઘુનાથગિરિ મનમાં હરખે ॥ ૫ ॥

ॐ

श्री मनोहर पीठाधीश्वर योगीराज बलवन्तगिरिजी मंगलगिरिजी महाराज (लुणावाड़ा अखाड़ा)

स्त्रीहारे विपयाकारे भृत्य शिष्य समाकुले ।
धर्म रेखा सुरक्षायां चिन्तयन्नाशिष्य साहसम ॥

श्री मनोहर पीठस्य प्रधानेश यतीश्वरम ।
श्री बलवन्तगिरिपादं मनसा प्रणमाम्यहम ॥

श्री

रजकणो की महत्ता

ॐ

पूरित प्रेम मनोहर मंगल शिव बलवन्त ।
गिरि रघुनाथ विचारियूं हवे सुशान्ति इकन्त ॥
विन शान्ति जगमां जीवड़ाओने सुखी जोया नथी ।
थइ भ्रान्ति अेवा कोण जे रघुनाथगिरि रोया नथी ॥
ते भ्रान्ति गुरुपद रज अड़याथी दूर नाशी जाय छे ।
रघुनाथगिरि बलवन्तपद परिश्रम अेक लखाय छे ॥
अज्ञानना पड़दा मनोहरनाथ मंगल शिव तणां ।
बलवन्तपद रजकण अड़याथी तरत फाटी जाय छे ॥
दोहा : महामोह अति अकड़मति, वर्तमान अनुसार ।
मारा जेवा मूरखा धन्य गुरु दरबार ॥

ॐ

श्री महादेवजी की आरती

ॐ जय शिवॐकारा, स्वामी हर भज ॐकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, भोले भोले नाथ महादेव, अरधांगे गौरा ॥१॥
हरिः ॐ हर हर हरमहादेव ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजै, शिव पंचानन राजै।
हंशासन गरुड़ासन हंशासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ॥२॥
हरिः ॐ हर हर हरमहादेव ॥

दो भुज चार चतुर भुज अष्ट भुज तुम सोहे, शिव दश भुज तुम सोहे।
तीनो रूप निरखता, शंकर रुप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥३॥
हरिः ॐ हर हर हरमहादेव ॥

लक्ष्मी वर सावित्री पारवती संगे, शिव पारवती संगे।
गायत्री अरधांगे, गायत्री अरधांगे, शिव गौरा संगे ॥४॥
हरिः ॐ हर हर हरमहादेव ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर वाघम्बर अंगे शिव वाघम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक, सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥५॥
हरिः ॐ हर हर हरमहादेव ॥

अक्षमाला वनमाला रूण्डमाला धारी, शिव रूण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी हरमुरारी, त्रिपुरारी हरमुरारी, करकमलाधारी ॥६॥
हरिः ॐ हर हर हरमहादेव ॥

कर मध्ये करमंडलचक्र त्रिशूल धरता, शिवचक्र त्रिशूल धरता
दुःख हरता सुख करता दुःख हरता सुख करता युग पालन करता ॥७॥
हरि ॐ हर हर हरमहादेव ॥

काशीमें विश्वनाथ विराजत नन्दाब्रह्मचारी, शिव नन्दाब्रह्मचारी।
नित उठि भोगलगावत सबदिन दर्शन पावत महीमा अतिभारी ॥८॥
हरि ॐ हर हर हरमहादेव ॥

शिवजीकी आरती निशदिन पढ़ गावे, शिव सब दिन रट गावे।
भणत शिवानन्द स्वामी जपत हराहर स्वामी मनवांछित फल पावे ॥९॥
हरिः ॐ हर हर हरमहादेव ॥

जयशिवॐकारा स्वामी हर भजॐकारा ॥

—ॐ—ॐ—ॐ—

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ।
मंगलं भगवान विष्णुः मंगलं गरुड़ ध्वजः ।
मंगलं पुन्डरी कांक्षं मंगलायतनो हरि : ॥
सर्वमंगल मांगल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥

१ ॐ नमः पारवती पते हर हर महादेव
२ श्री नाथजी महाराजकी जय
३ सनातन धर्मकी जय

ॐ

श्री अंबेगौरी माताजीकी आरती

ॐजय देवी अम्बे गौरी, मैया हर मंगल मुरती।
मैयाजीको सब युग सेवत, अम्बाजीको निशदिन ध्यावत,
हरि ब्रह्मा शिवरी ॥१॥ "हरिःॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै,
मैया रक्ताम्बर राजै। रक्तक पुष्पनी माला,
रक्त कुसुमनी माला, कंठन पर साजै ॥२॥
"हरि ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मदको।
मैया टीको मृग मदको उज्वल हैं दोऊ नयना,
निरमल हैं दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको ॥३॥
"हरिः ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके दो भुज चार चतुर भुज अष्ट भुज तुम सोहे,
मैया दश भुज तुम सोहे। तीनो रुप निरखता,
अम्बाजीको रुप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे ॥४॥
"हरि ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके हाथोंमें कंगन कानोंमें कुण्डलनासाग्रे मोती
मैयानासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर (२) तिनके सम ज्योती ॥५॥
"हरि ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके केशरि वाहन खड़ खप्पर धारी,
मैया खड़ खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत,
सुरनर मुनिजन ध्यावत इनके दुख हारी ॥६॥
"हरिः ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके हरतं वरतं महिसासुर घाती,
मैया महिसासुर घाती। धूम्र विलोचन नाशिक,
धुम विलोचन नाशिक, निशदिन मधुमाती ॥७॥
"हरि ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके चण्डन मुण्ड संहारत श्रोणित बीजहरे,
मैया श्रोणित बीज हरे। शुम्भ निशुम्भ पछारत,
शुम्भ निशुम्भ विदारत निरभय राज करे ॥८॥
"हरिः ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके चौसठ योगिनि मंगल गावत निरतकरतभैरों,
मैया निरत करत भैरों। बाजत ताल मृदङ्ग,
बाजत झांझ मंजीरा, संख झालर डमरू ॥९॥
"हरि ॐ जय देवी जय देवी"

देवीजीके कंचनथार विराजत अगर कपूर वाती,
मैया अगर कपूर वाती। पावागढ़में विराजत,
धवलागढ़में विराजत, कोटि रतन ज्योति ॥१०॥
"हरिः ॐ जय देवी वय देवी"

देवीजीके काशीमें विश्वनाथ विराजत नन्दा ब्रह्मचारी,
मैया नन्दा ब्रह्मचारी। नित उठि भोग लगावत,
सबदिन दरशन पावत, महीमा अति भारी ॥११॥
"हरिः ॐ जय देवी जय देवी"
देवीजीकी आरती निशदिन पढ़गावे मैया सब,
दिन रटगावे भणत शिवानन्द स्वामी,
जपतहरा हर स्वामी, मनवाच्छित फल पावे ॥१२॥
"हरिः ॐ जय देवी जय देवी"
जय देवी अम्बे गौरी मैया हर मंगल मुरती। मैयाजीको
सब युग सेवत, अम्बाजीको निशदिन ध्यावत,
ब्रह्मा हरि शिवरी ॐ ॥

: माताजीकी आरती :

जय आद्याशक्ति मा जय आद्याशक्ति
अखंड ब्रह्मांड नीपाव्यां (२) पड़वे पंडे माय...
जयो जयो मा जगदंबे.
द्वितीया बेय स्वरुप, शिवशक्ति जाणुं मा (२)
ब्रह्मा गणपति गाऊं (२) हर गाऊं हर मा....जयो.
तृतीया त्रण स्वरुप, त्रिभुवनमां बेठां मा (२)
त्रया थकी तरवेणी (२) तुं तरवेणी मात...जयो.

चोथे चतुरा महालक्ष्मीजी, सचराचर व्याप्यां मा २)
चार भुजा चौ दिशा (२) प्रगटयां दक्षिण मांय...जयो.
पंचमी पंच ऋषि, पंचमी गुणपद्मा (२)
पंच सहस्र त्यां सोहीअे (२) पंचे तत्वो मांय...जयो.
षष्ठी तुं नारायणी, महिषासुर मार्यों मा (२)
नरनारीने रुपे (२) व्याप्यां सघड़े मात...जयो.
सप्तमी सप्त पाताळ, सावित्री संज्ञा मा (२)
गौ गंगा गायत्री (२) गौरी गिरिजा मांय...जयो.
अष्टमी अष्ट भुजा, आई आनंदा मा (२)
सुरनर मुनिवर जन्म्या (२) देव दैत्यो मांय....जयो.
नवमी नवकुळनाग, सेवे नवदुर्गा मा (२)
नवरात्रीनां पूजन शिवरात्रीनां अर्चन कीधां हरि ब्रह्मा....जयो.
दशमी दश अवतार, जय विजयादशमी मा (२)
रमाअे राम रमाड़्या (२) रावण रोड़्यो मात....जयो.
अेकादशी अगियारश, कात्यायनी कामा मा (२)
कामदुर्गा कालिका (२) श्यामा ने रामा....जयो.
बारसे बाळा रुप, बहुचरी अंबा मा (२)
बटुक भैरव सोहे काळ भैरव सोहे तारा चाचर मांय...जयो.
तेरसे तुळजा रुप, तमो तारुणी माता मा (२)
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (२) गुण तारा गाता....जयो.

चौदसे चौदा रुप, चंडी चामुंडा मा (२)
भक्ति भाव करी आपो
पोतानो करी स्थापो सिंह वाहिनी माता....जयो.
पूनमे कुं । भर्यों सांभड़जो करुणा ना (२)
वसिष्ठ गुरुअे वखाण्या;
मार्कंड मुनिअे वखाण्या, गाई शुभ कविता...जयो.
संवत सोळ सत्तावन, सोळसें बावीसमां मा (२)
संवत सोळे प्रगट्यां (२) रेवाने तीरे
हर गंगाने तीरे हर यमुनाने तीरे... ....जयो.
त्रंबावटी नगरी मां रुपावती नगरी मैया मंछावटी नगरी
सोळ सहस्त्र त्यां सोहीअे (२) क्षमा करो गौरी ... .जयो.
शिव शक्तिनी आरती, जे कोइ गाशे मा (२)
भणे शिवानंद स्वामी (२) सुख संपत थाशे........
हर कैलाशे जाशे हर अंबा दुःख हरशे हर बहुचर दुःख हरशे.
जयो जयो मा जगदंबे.

आरती वंदना

मुखे ते ताम्बूलंनयन युगले कज्जलकला
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक लता
स्फुरत्कांची शाटी प्रथुकटि तटे हाटकमयी
भजामस्त्वां गौरी नगपति किशोरी मविरतम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो ।
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ॥
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनम् ।
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥
ॐ नमः पारवतीपते हर हर महादेव ॥

मंत्र पुष्पांजलि

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती कालीकला मालिनी
मातंगी विजया जया भगवतीदेवी शिवाशाम्भवी
शक्तिः शंकर वल्लभास्त्रियनां वागवाहीनी भैरवी
ॐकारी त्रिपुरापुरापुरमहे श्रीमाता कुमारीसती
अम्बे मातकी जै ॥

जगज्जननी मातकी जय ॥

उमिया मातकी जै ॥

ॐ नमः पारवतीपते हर हर महादेव ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ

मांका सात पुकारो

(पुकार पहेली)

मां मोरी सुनलो करूण पुकार ॥
भटकत फिरत गहन वन विषयन, मनसंग इच्छा नार ।
कामक्रोध मद मोह वन्य पशु,
धाय धरत किल कार ॥१॥मां....
कर्म गलिन में कण्टक झाड़ी,
जाको नहिं है पार ।
झुकि झुकि निकरत छुलि गई देहिया,
मन नहिं मानत हार ॥२॥मां...
कहुं पथ दिखत कतहुं छिपिजातो,
ढाढ़ो करहु विचार ।
चलत कुपन्थ अगम विषयन वन,
ढूंढि न मिलत किनार ॥३॥मां....
हारि थको कित जाहुं मावड़ी,
गिरि रघुनाथ संभार ।
तुझ विन काहि पुकारौं जननी,
तुझ विन कोउन हमार ॥४॥मां....
मां मोरी सुन लो करूण पुकार ॥

ॐ

(पुकार बीजी)

मां मेरी सुनलो करुण पुकार ॥
इस जंगल की खन्दक खाई, भय दायक खंगार ।
गिरत परतमां चढ़ि चढ़ि उतरत
रो रो करहुं पुकार ॥१॥मां...

आश्रय चाहि दिशा जो देखूं,
तहं व्यालन फुफकार ।
बीछिन व्यथा वखानौं केहि विधि,
देखत चढ़त बुखार ॥२॥मां....

सिंह व्याघ्र अति भय उपजावत,
करि कठोर घुंघार ।
वर्षा पवन अंधेरी रजनी
ताहु पे ओला मार ॥३॥मां....

सब विधि हृदय दुखित अति व्याकुल,
गिरि रघुनाथ पुकार ।
जो न सुनो मा तो फिर अवतो
मैं हो गयो लाचार ॥४॥मां....

ॐ

(पुकार श्रीजी)

विषय वासना घर कर बैठी,
कामी कपट पहार ।
लम्पट दंभ अधम मति मोरी,
दुष्ट चरित्र अपार ॥१॥मां

नहीं धन धर्म धैय मन मोरे
सपनेहु नहि सुविचार
बोध चाहि विषयानल झड़पत
रे मन तोहिंधिक्कार ॥ २ ॥

कहं लगि कहहुं चरित हम अपने,
अवगुन को नहीं पार ।
सोचत रहि रहि मन अपने में
मनहीं में करत विचार ॥३॥मां

थोरे हि में जो सत्य सुनौतो;
मैं अवगुण भंडार ।
गिरि रघुनाथहिं तुझ विन मैया,
और नहीं आधार ॥४॥

ॐ

(पुकार चौथी)

ज्ञान ध्यान जप तप नहि जानू,
नहि कुल शिष्टाचार
व्रत उपवास दान तव पूजा,
नहिं सेवा को सार ॥१॥मां

वेद पुराण शास्त्र नहि जानत
किमि उतरौं भव पार ।
शुभ कर्मन से मम मति छूटी,
कुकरम करन तयार ॥२॥मां

केहि विधि धरहुं धीर जगदम्बा,
देखत दुःख पहार ।
एक दुःख नहिं भोगि सिरानो,
दिख रहे आगे चार ॥३॥मां

अवघट बाट फंसेकी लज्जा,
रख या धक्का मार ॥
गिरि रघुनाथ शरण तकि आयो,
तुमको सब अधिकार ॥४॥

ॐ

(पुकार पांचमी)

त्राहि त्राहि माम् त्राहि भवानी
जगकी सिरजनहार ।
रक्ष रक्ष दुःख से जगदम्बे
जगकी रक्षणहार ॥१॥मां

पाहि पाहि माम् पाहि भवानी,
भव दुख मेटनिहार ।
शरणागत को शरण देहु मां,
मैं ठाढ़ो तव द्वार ॥२॥मां

मैं पापी जुग जुग को मैया
तू सब जाननिहार ।
अगणित पापी अधम उद्धारे,
सुनि आयों तुझ द्वार ॥३॥मां

शरण मिले मोंहि अति सुख होगा,
नहिं तो हिं भार लगार ।
गिरि रघुनाथ अधम उद्धारिणि
कर मां मम उद्धार ॥४॥मां

ॐ

(पुकार छट्ठी)

भेक भुजंग गले में फांसी,
जामें ग्रन्थि हजार ।
जाहि कहौं खोलन सो कसि के,
खींचत करि हुंकार ॥१॥ मां

काम निकारि हंसत दै ताली,
तापर टिल्ली मार ।
कारिख पोतिनगर में फेरौं,
सबमिलि करत विचार ॥२॥ मां

निज पति जात निरखि निजनयनन,
नहि मम साथीदार ।
चिन्तानल मम हृदय व्यापि गई
मच गयो हाहाकार ॥३॥ मां

नहिं सूझत कछु भयो आंधरो
निजपति जात निहार,
गिरि रघुनाथ क्षमा अब मांगे,
अम्बा हाथ पसार ॥४॥ मां

ॐ

(पुकार सातमी)

नाम तिहारो पतित पावनी,
जगदम्बे शिव नार ।
अधम उद्धारन मैं सुनि आयों,
दीनन की रखवार ॥१॥मां

शरणागत की रख मां लज्जा,
अब न मोंहि धुतकार ।
अगणित पापी तूने तारे,
कहते वेद पुकार ॥२॥मां

लक्ष्मी उमा रमा ब्रह्माणी,
गिरिजा नाम उदार ।
सरस्वती दुर्गा कौमारी,
कोविद मां सुकुमार ॥३॥मां

कमलासनि मम विपति निवारो,
हंसासनि दुःख टारि ।
सिंहासनि सुख सबको दीजै
यह रघुनाथ विचार ॥४॥मां

ॐ

माका क्रिया कौशल्य

जो चाहो मां कर सकती हो सर्वेश्वरी तुम्हारा नाम,
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव ये हैं प्रथक प्रथक सो तेरा काम
सब से परे ब्रह्म या कोइ और तत्त्व वह तेरा धाम
गिरि रघुनाथ तेरी सत्ता बिन जगका रुप कहां या नाम ॥१॥

सत्य चित् घनानन्द रुप से वेद तुम्हारा करते गान,
जिसपर कृपा करो मां उसको होता तेरा किञ्चित् ज्ञान
सब कुछ तो हो आप मधुरिमां हम मिथ्या करते अभिमान
गिरि रघुनाथ कृपा तेरी से ही जगमें जीवों की सान ॥२॥

कहीं लालिमां बन जीवोंको मोहित कर देती हैं आप,
कहीं बुद्धिकी मेधा बन कर उसी विश्वका लेती नाप।
कहीं भयंकरता बन आतीं जिसे देख जग उठता कांप,
गिरि रघुनाथ तुम्हीं चौदा भुवनोंकी होमां चालक चांप ॥३॥

हिन्दू बौद्ध पारसी मुस्लिम ईसाई याहो कोइ और,
तेरी ही मालाके दाने तेरे बिना इन्हे क्या ठौर।
फिर भी सत्य शान्ति बन करके कहीं चमकती हो सिरमौर
गिरि रघुनाथ आर्यमां बनके दो मुझको रहने का ठौर

卐

ॐ

माकी सर्वोच्च सत्ता

जननी जगमे जितने फल हैं
उनमें फलऐक महान तुम्हीं.
जननी जगमें जितने बल हैं
उनमें बलऐक महान तुम्हीं.
जननी जगमें जितने तल हैं
उनमें तलऐक महान तुम्हीं.
जननी जगमें जितने थल हैं
उनमें थलऐक महान तुम्हीं.
धिक है धिक है धिक हय हमको
तुमको तजि मैंमति और कहीं
जननी लखि दीन अनाथ मुझे
रघुनाथहिं पाथकि साथ तुम्हीं

卐

भजन—१

साँचानी दुनियाँ नथी रे नथी
जोयु मे जगने मथी रे मथी
तेथी हूँ कहु छू कथी रे कथी
साँचानी दुनियाँ नथी रे नथी ॥ १ ॥
जे खुल्ला गपोड़ा मारे छे
सत्कर्मों कर्ता हारे छे
थाता कार्योंने वारे छे
मन मोद वगाड़े बकी रे बकी ॥ २ ॥
साँचानी दुनियाँ नथी रे नथी
कर्मठ वीरोनी बलिहारी
छोड़ी जेणे स्वारथ दारी
व्यापक थई बुद्धि तणी झारी
झक झोरे तेने झकी रे झकी ॥ ३
साँचानी दुनियाँ नथी रे नथी
सत युग त्रेता द्वापर कलियुग
हरिश्चन्द्र रामने धर्मसुवन
रघुनाथगिरि राजा विकरम
तेवोनेय दुनियाँ भसी रे भसी ॥ ४
साँचानी दुनियाँ नथी रे नथी

भजन—२

भले पत्थरो साथे माथु पछाड़ो

नथी कोई जगमां थवानो तमारो ॥ टेक ॥

अल्या मूर्ख मन जरा तो विचारो,

नफा खोट अेवा थवाना हजारो

समयसृष्टि करतां हृदयने संभारो

अलख नाम लखमां लईने उचारो ॥ १ ॥भले पत्थरो...

असंख्यो जनम मृत्यु घाटो फरीने

न करवा घटे कर्म तेवा करीने

अहो पापना कोथराओ भरीने

पछी पुण्यलोके जुवे छे उतारो ॥ २ ॥ भले पत्थरो....

अल्या शाकभावेज हीरा गणे छे

न मळता पछी वेद उलटा भणे छे

कर्या कर्म भोग्या वीना शुं टळे छे

कुसंगति तणो आ बधो छे लवारो ॥३॥ भले पत्थरो....

नसदूर्वृत सत्संग विन छे थवानी

कुसंगोतणी नृत्य करती भवानी

वृथाजिन्दगी अेमनेमज जवानी

पछी अन्तमां पण थवानो भवाड़ो ॥४॥ भले पत्थरो....

रडी आज रघुनाथगिरि बूम पाड़े

जुओ सत्यने पाप आँखो बताड़े

प्रभू पापीओ धर्मनी जड़ उखाड़े

सुरक्षा तणो अेक तारो सहारो ॥५॥ भले पत्थरो....

ॐ श्री रूद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरुपं, विभुंव्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूप
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिराग्यान गोतीतमीशं गिरीश
करालं महाकालकालं कृपालं, गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥
तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीर, मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरी
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडल शुभ्रनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयाल
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि. ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाश
त्रयी शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहंभवानी पतिं भावगम्यम् ॥
कलातीत कल्याण कल्पांतकारी, सादासज्जनानन्ददाता पुरारी
चिदानंद संदोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी. ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, भजंतीहलोके परेवा नराणा
न तावत्सुखंशान्तिसन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूता धिवासम् ॥
न जानामियोगं जपं नैव पूजां, नतोऽहंसदासर्वदाशंभु तुभ्
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं, प्रभो पाहि शापान्नमामीशशंभो. ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये
ये पठिन्त नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति

ॐ ॐ ॐ

श्री गणेश जी की आरती

ॐ जय जयश्री गणराज ॥
विद्या सुख दाता गण सम्पति सुख दाता ।
धन्य तुमारे दर्शन, धन्य तुमारी महिमा मेरो मन रहिता ॥१॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

रिद्धि सिद्धि के दाता संकटके वैरी, गण संकट के वैरी ।
विघ्न विनाशन मूर्तिः, विघ्नविनाशन मूर्तिः सम्पति अधिकारी ॥२॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

एक हाथमें लड्डू दूजे हैं वीणा गण दूजे है वीणा ।
तीजे हाथमें फरशी, तीजे हाथमे फरशी चौथे वरदाता ॥३॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

उत्तम दर्शन तुमरे गज विशाल मूर्तिः गण गज विशाल मूर्ति
कुमकुम चन्दन चरचित कुमकुम चन्दन चररित पुष्पन अधिकारी ॥४॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

घण्टा झूलत, मस्तक भाले शुभकारी गण भाले शशिधारी।
सूर्य प्रकाश करे अति, सूर्य प्रकाश करे अति ऐसी छवि तुमरी ॥५॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

हाथ लिये गुड़ लड्डू अच्छो मुख गज को गण अच्छो मुख गजको।
दन्त विशाल विराजत दन्त विशाल विराजत सुत गौरी हरको ॥६॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

ऐसे हो महाराजा मोको अति भावो गण मोको अति भावो।
गोकुलमें यदुनन्दन अवधपुरी रघुनन्दन निशदिन पढ़ गायो ॥७॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

काशीमें ढुण्ढि राज विराजत नन्दा ब्रह्मचारी गण नन्दा ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत सब दिन दर्शन पावत महिमा अतिभारी॥८॥
ॐ जय जयश्री गणराज ।

जो गणपतिजी की आरती निशदिन पढ़ गावे गण सब दिन रट गावे
भणत शिवानन्द स्वामी, जपत हराहर स्वामी
मन वांच्छित फल पावे ॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥९॥

विद्या सुख दाता, गण सम्पति सुख दाता ।
धन्य तुमारे दर्शन धन्य तुमारी महिमा मेरो मन रहिता ॥१०॥
ॐ जय जय श्री गणराज ॥

श्री गंगाधरजीकी आरती

ॐ

ॐ जय गंगाधर हरशिव जय गिरिजाधीस, शिव हर गौरीनाथ।
त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां रक्षय शम्भो, कृपया जगदीश ॥१॥
हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुम विपिने। शिव कल्पद्रुम विपिने
गुञ्जति मधुकर पुञ्जे गुंजति मधुकर पुंजे, कुंज वने गहने ॥

ॐ

कोकिल कुंजति खेलति हन्सावली ललिता, शिव हंसावली ललिता ॥
रचयति कला कलापं, रचयति कला कलापं, नृत्यति मुद सहिता ॥२॥

हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

तस्मि ल्ललित सुदेशे शाला मणिरचिता, शिव शाला मणि रचिता
तन्मध्ये हर निकटे, तन्मध्ये हर निकटे, गौरी मुद सहिता ॥

ॐ

क्रीडां रचयति भूषण रंजित निजमीशम् शिव रंजितनिजमीशम् ।
इंद्रादिक सुरसेवित ब्रह्मादिक सुरसेवित प्रणमति ते शीर्षम् ॥३॥

हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

विबुध वधुर्बहु नृत्यति हृदये मुद सहिता, शिव हृदये मुदसहिता ।
किन्नर गानं कुरुते किन्नर गानं कुरुते, सप्त स्वर सहिता ॥

ॐ

धिनकत थै थै ध्वनिनद मृदंगवादयते. शिव मृदंग नादयते
क्वण क्वण ललिता वेणुः क्वण क्वण ललिता वेणुः मधुरं
नादयते ॥४॥

हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

रूण रूण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलितं शिवनूपुरमुज्ज्वलितं ।
चक्रं भ्रमते ब्रह्मा इति चक्रं भ्रमते विष्णु रिति कुरुते तांधिकताम् ॥

ॐ

तां तां लुप चुप तालं वादयते, शिव तालं नादयते ।
अंगुष्ठांगुलिनादं अंगुष्ठांगुलिनादं लास्यकतां कुरुते ।
हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥५॥

कपूर आरती गौरं पञ्चाननसहितं, शिव पञ्चाननसहितम् ।
त्रिनयन शशिधर मौले: त्रिनयन शशिधर मौले: विषधर कण्ठयुतम्

ॐ

सुन्दर जटा कलापं पावकयुत भालं, शिव पावक शशिभालम् ।
डमरू त्रिशूल पिनाकं, डमरु त्रिशूल पिनाकं, करधृत नृकपालम् ।।६॥
हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

शंखनिनादनिकृत्वा झल्लरि नादयते शिव झल्लरि नादयते ।
नीराजयते ब्रह्मा नीराजयते विष्णुः वेद ऋचां पठते ।

ॐ

इति मृदुचरणसरोरज हृदि कमले धृत्वा शिव हृदि कमले धृत्वा ।
अवलोकयति महेशं शिव लोकयति सुरेशं ईशं अभिनत्वा ॥७॥
हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

मुण्डन चित उर माला पन्नगमुपवीतं शिव पन्नगमुपवीतम् ।
वाम विभागे गिरिजा वाम विभागे गौरी रूपमति ललितम् ॥

ॐ

सकल शरीरे मनसिजकृत भस्माभरणं, शिवकृत भस्माभरणम् ।
इति वृषभध्वजरूपं, हर शिव शंकर रुपं तापत्रय हरणम् ॥८॥
हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

ध्यानं आरती समये हृदये इति कृत्वा, शिव हृदये इति कृत्वा
रामं त्रिजटानाथं, शम्भुं हर जटानाथं, इशं अभिनत्वा ॥

ॐ

संगीत मेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरूते शिवरटनंयः कुरुते ।
शिव सायुज्यं गच्छति, हर सायुज्यं रक्षति भक्त्या शृणुते ॥९॥
हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश शिव हर गौरीनाथ ।
त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां रक्षय शंभोः कृपया जगदीश ॥१०॥
हरिः ॐ हर हर हर महादेव ॥

संध्या आरती वंदन

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥१॥

रुन्डालि माला सुकपालकाले कपालमाला विश्वेश्वराय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥२॥

ॐ शिव हर शंकर गौरीशम्, वन्दे गंगाधरमीशम् ।
शिव, रुद्रं पशुपतिमीशानम्, कलये काशीपुरी नाथम् ॥३॥

ॐ जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशंकर जय शम्भो ।
ॐ जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरी शंकर जय शम्भो ॥४॥

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैस्तवै,
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदै गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित तद्‌गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥५॥

सत्यं हेतु विवर्जितं श्रुति गिरामाद्यं जगत् कारणम् ।
व्याप्त स्थावर जंगमं निरुपमं चैतन्यमन्तर्गतम् ॥
आत्मानन्द विचेष्टमानमनिशं कालान्तकं सञ्चितम् ॥
नित्यं तं त्रिगुणालयं श्रुतिनुतं पश्यन्ति रुद्धेन्द्रियाः ॥६॥

योगाल्लब्ध पदाम्बुजं हि रुचिरं, हेमाम्बरं नित्यशः ।
कण्ठस्थानसु कौस्तुभं मुनिवरं सौन्दर्य शोभाकरम् ॥
आशाम्भोज विकास वासित जनं कालान्तकं दुखहम् ।
तं देवं भगवन्तमेव सततं वन्दे परं दैवतम् ॥७॥

व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेन्द्रस्य का ।
का जातिर्विदुरस्य यादवपते रुग्रस्य किं पौरुषम् ॥
कुब्जायाः कमनीय रूपमधिकं किं तत्सुदाम्नोधनम् ।
भक्त्याः तुष्यति केवलं न च गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः ॥८॥

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतम् ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्‌गुरुं तं नमामि ॥९॥

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भव भयहरं सर्व लोकैक नाथम् ॥१०॥

नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्र पादाक्षिशिरोरूबाहवे ।
सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्र कोटी युग धारिणे नमः ॥११॥

नमः कमलनाभाय; नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते केशवानन्त, वासुदेव नमोस्तुते । ॥१२॥

वासनात्वासुदेवस्य, वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोस्तुते ॥
नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ ॥१४॥

आकाशात्पतितं तोयं यथागच्छति सागरम् ।
सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥१५॥

केशवः क्लेशनाशाय, दुःख नाशाय माधवः ।
हरिश्च पाप नाशाय, गोविन्दो मोक्ष दायकः ॥ ॥१६॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारूण्य भावेन रक्ष रक्ष महेश्वर ॥ ॥१७॥

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्
शिव शासनतो, शिव शासनतो, शिव शासनतो शिव शासनतः
हृदिमेव शिवो हृदिमेव शिवो, हृदिमेव शिवो हृदिमेव शिवः
मम शासनतो, मम शासनतो, मम शासनतो, मम शासनतः ॥१८॥

मंत्र पुष्पांजली

शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं ।
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम् ।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ ॥१॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती कालीकला मालिनी ।
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ॥
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ।
ॐ कारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी सती ॥२॥

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ॥३॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥४॥

कैलास राणा शिव चन्द्रमौले फणीन्द्र माथे मुकुटो जलहरी
कारूण्य शंभो भव दुःखहारी तुझ विन न शम्भो मुझे कोइ तारे ॥५॥

वैराग्य योगी शिव शूलपाणिः सदा समाधि निजबोध वाणी ।
उमानिवासः त्रिपुरान्तकारी तुझ विन न शम्भो मुझ कोइ तारे ॥६॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥७॥

मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।
मन्दार पुष्प बहु पुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवायः ॥८॥

शिवाय गौरी वदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषभध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥९॥

वशिष्ठ कुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥१०॥

यज्ञ स्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमःशिवाय ॥११॥

वन्दे देवमुमापतिं सुर गुरूं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ॥

वन्दे सूर्य शशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दं प्रियम् ।
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥१२॥

देवं चन्द्र कलाधरं फणिधरं ब्रह्मा कपालाधरम् ।
गौरी वाम्य धरं त्रिलोचन वरं रुद्राक्ष माला गलम् ॥
गंगारङ्ग तरङ्ग पिङ्गल जटा जूटं श्रीगंगाधरम्
नीलाग्रे भज विश्वनाथ सिद्धसहितं सोमहेश रक्षा करम् ॥१३॥

हे जिह्वेभज विश्वनाथ बद्रि केदार भस्मेश्वर ।
भीमाशंकर वैद्यनाथ ओडे नागेश्वरा रामेश्वरा ॥
ॐ कारे ममलेश्वरं स्मर हरिहरं महङ्काल मल्लिकार्जुनम्
ध्यायेत् त्र्यम्बक सोमनाथ हृदये ऐकान्त श्री ॐ नमः ॥१४॥

गंगा सिन्धु सरस्वतीच यमुना गोदावरी नर्मदा ।
कावेरी सरयू महेन्द्र तनया चर्मण्वती वेदिका ॥
क्षिप्रा वेत्रवती मही सुरनदी ख्याता गया गण्डिका ॥
पूर्णा पूर्ण जलै समुद्र सहितं कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥१५॥

हे राम पुरुषोत्तम नरहरे नारायण केशव ।
गोविदं गरुडध्वज गुणनिधे दामोदर माधव ॥
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ॥१६॥

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षःस्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे गजमौक्तिकं कर तले वेणुः करे कंकणम् ॥
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली ।
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः ॥१७॥

असितगिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे ।
सुर तरुवर शाखा लेखिनी पत्र मुर्वी ॥
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालम्
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥१८॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्चसखा त्वमेव ॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥१९॥

हरिः ॐ अखंड मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२०॥

आकाशे ताडकालिङ्गं पाताले हाटकेश्वरम् ।
मृत्यु लोके महङ्काल सर्वलिङ्गं नमोस्तुते ॥२१॥

हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपति
गूं हवामहे प्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपति गूं हवामहे ।
निधीनान्त्वा निधिपति गूं हवामहेव्वसो मम ॥
आहमजानिगर्ब्भधमा त्वमजासिगर्भधम् ॥२२॥

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्यासन् ॥
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वेसाध्याः सन्ति देवाः ॥२३॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने:
नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे ।

समे कामान्कामकामाय मह्यं ।
कामेश्वरो वैश्रवणोददातु ।
कुवेराय वैश्रवणाय ।
महाराजाय नमः । ॥२४॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं
पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमहाधि पत्यमयं
समन्तपर्यायी स्यात् ।
सार्वभौमः सार्वायुषः आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै मसुद्र
पर्यन्ताया ऐकराडिति । तदप्येषः श्लोकोभिर्गीतो
मरुतः परिवेष्टारोमरुत्तस्यावसन्गृहे ।
आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति ॥२५॥

ॐ विश्वत श्चक्षुरुतः विश्वतोमुखो विश्वतोबाहु रुतविश्वितस्पात्
सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव अेकः ॥२६॥

ॐ नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर ॥२७॥

卐 卐 卐

ॐ तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ॥१॥

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा
विश्ववेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्योंअरिष्टनेमिः
स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातुः ॥ ॥२॥

ॐ सद्योजातंप्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः ।
भवेभवेनातिभवे भवस्व माम् भवोद्‍भवाय नमः
वामदेवाय नमः ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमः रुद्राय
नमः कालाय नमः कल विकरणाय नमः बल विकरणाय
नमः बलाय नमः बल प्रमथनाय नमः सर्व भूतदमनाय
नमः मनोन्मनाय नमः ॥ अघोरेभ्यो: थघोरेभ्यः
घोर घोर तरेभ्यः सर्वेभ्य सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते
अस्तु रुद्र रुपेभ्यः ॥ ॥३॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महा देवाय धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥४॥

ॐ द्यो: शान्तिरन्तरिक्षगूं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः ।
शान्तिरौषधयः शान्तिर्वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वे देवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः
सर्वगुं शान्तिः शान्ति रेव शान्ति
सा मा शान्तिरेधिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥५॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरि निभं चारु चन्द्रावतंसम् ।
रत्नैः कल्पोज्वलांगं परशुमृग वराभीतिहस्तं प्रसन्नं ॥
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं ।
विश्वाद्यं विश्वपन्द्यं निखिल भय हरं पञ्च वक्त्रं त्रिनेत्रम्
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पञ्च वक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥
शूलं वज्रं च खडगं परशुमभयद दक्षिणांगे वहन्तम् ॥

नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहितं साङ्कुशवामभागे ।
नानालङ्कार दीप्तं स्फटिक मणि नि.ं पार्वतीशं नमामि ॥७॥

ॐ नमः पार्वती पते हर हर हर महादेव

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्री शिव मानस पूजाः

रत्नै कल्पित मासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं ।
नाना रत्न विभूषितं मृगमदा मोदांकितं चन्दनम् ॥
जाती चम्पक विल्व पत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा ।
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यतां ॥१॥
सौवर्णे मणि खंड रत्न रचिते पात्रे धृतं पायसं ।
भक्ष्यं पंचविधं पयो दधि युतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूर खंडोज्ज्वलं ।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं ।
वीणा भेरि मृदंग काहल कला गीतं च नृत्यं तथा ॥
साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया ।
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥
आत्मात्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाःशरीरं गृहं ।
पूजाते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ॥
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥

इत्येवं हरपूजनं प्रतिदिनं यो वा त्रिसन्ध्यं पठेत् ।
योवा श्लोक चतुष्टयं च नियतं पूजां हरेर्मानसीम् ॥
सोऽयं सौख्यमवाप्नुयात् द्रुततरं साक्षाद्धरेर्दर्शनं ।
व्यासस्तेन महावसान समये कैलास लोकं गतः ॥५॥

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ॥
विहितम् अविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥

ॐ नमः पारवती पते हर हर महादेव

आदौ श्री गणराज विघ्न हरणं
जय एक दन्तं प्रभो ।
लम्बोदर करपद्म मोदकप्रियं
फरसांङ्कुशंधारणम् ॥
भक्ता नाम भरद्गजाननमहे
जय वक्रतुण्डं नमः ।
काशी धन्य प्रभाव मोक्ष नगरी
ध्यायेत् सदा शाम्भवम् ॥

ॐ नमः पार्वती पते हर हर महादेव.

गणपति परिवारं चारू केयूरहारं
गिरिवर धर सारं योगिनी चक्रचारम् ।

भव भय परि हारं दुःख दारिद्र्य दूरं
गणपतिमभिवन्दे वक्रतुण्डावतारम् ॥

ॐ नमः पारवती पते हर हर महादेव

गजाननं भूतगणाधि सेवितम् ।
कपित्थजम्बूफल चारुभक्षणम् ॥
उमासुतं शोक विनाशकारकम्
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम् ।
अपार संसार समुद्र मध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपया वदैत
द्विश्वेश पादाम्बुजदीर्घ नौका ॥

ॐ नमः पारवती पते हर हर महादेव

॥ श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् ॥

गजाननं भूतगणाधिसेवितम् । कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकम् । नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ।

श्री गणेशाय नमः

श्रीपुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ॥

अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्याऽयं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ॥
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ॥
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ॥
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहंतुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥
किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।

अनोशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मंदास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुपाम्
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥
महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तंत्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विपयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥
ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदम्
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरंचिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कंधवपुषः ।
ततो भक्तिःश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरम्
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान ।

शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणांभोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनम्
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनं ।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

अकांडब्रह्मांडक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

महीपादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यंता शतधृतिरथेन्द्रो धनुरथो
रथांगे चंद्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडंवरविधि-
र्विधेयैः क्रीडंत्यो न खलु परतंत्राः प्रभुधियः ॥१८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलवलिमादाय पदयो-
र्य देकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरम्
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसंतं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

स्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि ॥२४॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यंतस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः ॥२९॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः ।
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

क्वशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदम्
क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥
असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणनामीश पारं न याति ॥३२॥
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदंताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥३४॥
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हंति षोडशीम् ॥३५॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि सर्वमीश्वरवर्णनम् ॥३६॥
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३७॥

कुसुमदशननामा सर्वगंधर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् ।
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३८॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्रांजलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३९॥

श्री पुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कंठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४१॥

यदक्षरं पदंभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥४२॥

हरिः ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
॥ ॐ तत्सत् ॥
॥ इति श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥

गणपति स्तवन

उमापुत्र गौरीश सुत प्रेम पावन ।
परम व परमार्थ श्रुति संन्त भावन ॥१

निराकार साकार श्रुति संत वदतां ।
स्मरण मात्रथी मल हृदयना सलगता ॥२॥

प्रथम पूज्य गण राजगण राज्य व्यापी ।
हरो वेदना विघ्न सद्धर्म स्थापी ॥३॥

जगतमां महां नीच निजने निहारी ।
रुदन मन करे छे शके ना पोकारी ॥४॥

जटाजूट शोभा मुगुटनी निराली ।
करण क्रीट किरणावली चन्द्रभाली ॥५॥

महागन्ध मिश्रित त्रिपुण्डाङ्कभाले ।
हरे मन क्रिया सूंडनी वक्र ताले ॥६॥

गले हार छे सर्पनां श्वेत काला ।
प्रवालो तणी माल ने पुष्प माला ॥७॥

दुपट्टो जरीनो पवनथी फरकतो ।
सिन्दुर वर्ण पीताम्बरीथी चड़कतो ॥८॥

अभयदान आपो अटल राहियोने ।
फरसु लइ विनाशो विघन कारियां ने ॥९॥

महा नादिनी वीण प्रेमे वगाड़ी ।
महा मोद मोदक खवाड़ो जगाड़ी ॥१०॥

महा पापियोने महा त्राण आपो ।
वंध्या जीवड़ाओ तणा बन्ध कापो ॥११॥

नथी भान हमने हमो वाल तारा ।
जगत वन गहन पन्थ जोऊं अपारा ॥१२॥

अटल संघ प्रतिवन्ध मा छे मूकाणो ।
खरो कार्य परमार्थनो छे रोकाणो ॥१३॥

अहो त्याग क्यां भोगनू आतो थाणू ।
अटल छत्रपति संघ तारु फसाणू ॥१४॥
दया दृष्टिथी संघने प्रेम पोषी ।
महेश्वर कुंवर हे सदा भाव तोषी ॥१५॥
नथी भाव तो पण दुःखी थइने आव्या ।
विना भावथी आ हृदय भेट लाव्यां ॥१६॥
नथी योग्य रघुनाथगिरि वात सांची ।
जनम नर सफल आपविन थाय क्यांथी ॥१७॥

गुरु प्रार्थना

विधि बोधित मार्ग तणी पतिता
मने जाणि तजो कई दोष नथी

अधिनायक छो गण राज तमे
हमने छे तेनो भान नथी ॥
विषयानल ज्वालथकी ओगरी ।
वहेता हमने घणो काल थयो ॥
प्रभु शान्तसुधा रस अेक रमो
हुं केम लखुं जड़ मोह ग्रस्यो
पछताउं घणो फरी तेज करुं
जग वच्चे भमैड़ानी जेम भमु
जे पूजा पात्र तजूं क्षणमां
नहिं पूजा योग्य समाज भजू
गण राज मनोहर नाथ प्रभो
शुभ आशिष बुद्धि विकास विभो
सहु रुप स्वरुप स्वभाव थये
रघु साथे अनाथ सनाथ थयो

श्री बापेश्वर स्तवन

मनोहरं मंगलमयमनन्तं बापेश्वराख्यं शिव सिद्धपीठम्
संसेव्यमानं मुनि योगिविप्रैर्देवै र्मनुष्यैर्भूतै रनेकैः ॥१॥

सत्कर्म यस्मात्परितो प्रवृतं साध्यं परं जीवन साधनायाम् ।
यस्मात गतिस्यात् निज पूर्ण रुपे रघुनाथ गिरिकथितं तत्
करमसद॥१॥

(श्री वापेश्वर स्तवन)

धाम मुक्तिसम धाम नहि गाम करमसद गाम
वापेश्वर सम थान नहिं जानत चतुर सुजान

उमानाथ वापेश्वर दीनबन्धू
करमसद गगनमां प्रभू आप इन्दु
दुखी जीवना छो सदा शान्ति सिन्धू
वशो मम हृदयमां थइ ज्ञान विन्दु । १

नमस्कार मारा हजारो तमोने
विमल बुद्धि आपो महेश्वर हमोने
शरम छे हमारी प्रभुजी तमोने
तमारी शरम पण न आवी हमोने २

महामूरखो छुं भरुं पाप बोजो
पतित वालको छुं उमानाथ जोजो
पतित पावनी गंगनी धार देजो
महापाप मारा हरी नाथ लेजो ३

कहुं जइने कोने विपत्ती हमारी
करेली कृति चित्त निजमां विचारी
उमानाथ रघुनाथगिरिनी खुमारी
तमारा विना छे वधो आ लवारी ४

श्री मनोहर पीठाधीश्वर योगीराज बलवन्तगिरिजी
मंगलगिरिजी महाराज (लुणावाड़ा अखाड़ा)
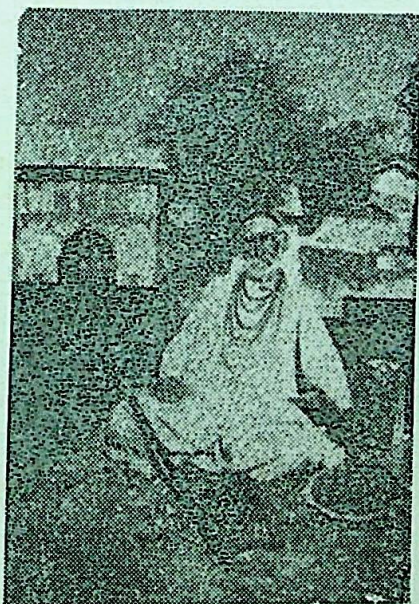
श्री गुरूब्रह्म स्वरुप लखाय ।
अविद्याकी जाल से देत छोड़ाई ॥
शिष्य कुशिष्य भले वनिजाय ।
गुरू तो गुरू है दया का महाई ॥
पर जो शिष्य सवै बन वाटि ।
परै गुरु चरणन में शिरनाई ॥
लागे न देर उतारत पार ।
महाभय रूप भवाब्धिकीखाई ॥

समर्पण

गुरु राज हरे सुख साज हरे ।
भव तारणशब्दजहाज हरे ।।
मन बुद्धि अहंकृतिचित गणा ।
रघुनाथगिरि सबरे अरपै ।।१।।

मनवृत्ति नवाहर जाशकृती ।
विन इन्द्रिन के सहवास भये ।।
मन चालक ज्ञान व कर्म रथा ।
रघुनाथगिरि सब रे अरपै ।।२।।

तन पिञ्जर अन्न मई रगड़ा ।।
मिलि साथ जहां उपजा झगड़ा
सबपाप व पुण्यनके पपड़ा ।
रघुनाथगिरि सब रे अरपै ।।३।।

दुख दर्द भरे जग जीवनके ।
लखि दृश्य हृदै भय से धड़के ।।
सबफेल उपाय गये सबरे ।।
रघुनाथगिरि सबरे अरपै ।।४।।

कुसुमाञ्जलि भावविहीनलिये ।
तुझमें न विणै मनलीन कीये ।।
वहु अर्थअनर्थ स्वरूप गहे ।
रघुनाथगिरि सबरे अरपै ।।५।।

ॐ

गुरू कृपा हि केवलम्

यस्यकृपा विघ्नभयं विनश्येत्
पुनाति चित्तंस्थिरतां व्रजेत
प्राप्तव्य गुह्याद् गुह्यं परंयत्
प्राप्नोति तस्मै गुरवे नमोस्तु ॥१॥

जिसकी कृपासे विघ्नोका भय समाप्त हो जाता है चित्त शुद्धहोकर स्थिरता (महानशान्ति) की ओर चल पड़ता है।

प्राप्त करने योग्य गुप्तसे गुप्त मानव जीवनका अन्तिम लक्ष्य, जिसकी कृपा से प्राप्त होता है ऐसे गुरू महाराजको हमारा नमस्कार हो ॥ १ ॥

यस्य कृपा गीर्कन्ठङ्गतास्यात्
शास्त्राणि हृद्यन्तर पूरयन्ति
मोहान्धकारस्य गतिर्नयत्र
तस्मै मनोहरनाथाय वन्दे ॥ २ ॥

जिनकी कृपा से सरस्वती कन्ठका अङ्गवन जाती है शास्त्रहृदय में भरजाते हैं।

मोहरूपी अन्धकार की जहां गति नहीं है मनका जिस में विलय हा जाता है एसे जा मनोहरनाथजी महाराज उनकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

यस्य कृपा वैदिक धर्म निष्ठा :
दिक्षा तथाज्ञान विशुद्ध प्राप्तम्
श्री नाथ पूजारत योग निष्ठम्
शिव गिरि गुरूपादमहं ननामि ॥ ३ ॥

जिनकी कृपा से वैदिक धर्म में मेरी निष्ठा, दिक्षा तथा विशुद्ध ज्ञानका विकाश हुवा, जो श्रीनाथजी महाराजके पुजारी श्री शिवगिरिजी महाराज योग निष्ठ गुरूपाद उनके चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ।

चैतन्य रुपात् सर्वस्थलेयम्
पश्यन्ति योगीनच योगभ्रष्टा:
तस्मै महायोग प्रबोध नाय
चैतन्य गिरये सततं भजामि ॥ ४ ॥

चैतन्य रुप से सभी स्थलों मे ठोस भरे हुये योगियों के द्वारा जानने योग्य योग भ्रष्ट जिन्हें नहीं जान सकते ऐसे ज्ञान योग के महान वक्ता

श्री चैतन्यगिरिजी महाराजका मैं ध्यानपूर्वक स्मरण करता हूँ ॥ ४ ॥

श्री सोमवारगिरि पादपद्मम्
वापेश्वराख्य शिवभक्ति निष्ठम्
आशाम्बरे दत्तप्रवेश मह्यम्
शिखागुरुंतं पदपूजयामि ॥ ५ ॥

श्री वापेश्वर महादेवके पुजारी श्री सोमवारगिरिजी महाराज जिन्होंने इस दिगम्बर सम्प्रदाय में प्रवेश दिया उन शिखागुरु के चरण कमलों का मैं नमस्कार करता हूँ। ॥५॥

प्रसन्नवदनानन नेत्र रेखा,
विलोक्य चित्तेऽमृत तुल्यता स्यात् ।
श्री नाथ पीठस्य मनोहरस्य
प्रधान पीठेषुविराजमानः ॥५॥

जिनके नेत्र मुख तथा शरीर की रेखायें ऐसी प्रसन्न हैं जिनको देखकर अन्तःकर्ण में अमृत के समान आनन्द श्रोत झरने लगता है जो श्री मनोहरनाथजी महाराज की पीठ (संस्था) के प्रधान पीठाधीश्वर ॥६॥

सन्यस्त सर्वेन्द्रिय शान्तवेषं,
श्रीमान् यतीन्द्रो दिक्पट् धराणाम् ।
मंगलगिरी शार्थक नाम यस्य,
तस्मैं महाबोध महात्मने नमः ॥७॥

दिगम्बर सन्यासियों के अग्रगण्य महान पुरुष नाम के समान ही जिनमें गुण भी भरा है ऐसे महाबोधरुप महान आत्मा श्री मंगलगिरिजी महाराज को मैं नमस्कार करता हुं.

यस्याश्रये साक्षरतां गतोऽहम्,
कृतान्यकृत्यानितमो प्रभावात्

छमा पराधान कृतवान् महान्तम् ,
श्री नाथ बलवन्तगिरिं नमामि ॥८॥

जिस के आश्रित रह कर मैंने साक्षरता का अभिमान प्राप्त किया तथा तमोगुण के प्रभाव से जो न करना चाहिये अैसे कार्योंको करने पर भी जिन्होंने वारम्वार हमारे अपराधोंको क्षमा करके अपनाया ऐसे श्री नाथजी महाराजके स्वरुप श्री बलवन्तगिरिजी महाराजको मैं नमस्कार करता हूं। ॥८॥

जाताः महान्ताः ये ये पुराऽत्र
बद्धाञ्जलिर्तान् हृदिचिन्तयामि
दातव्यमह्यम् ज्ञानं भवद्भिः
रघुनाथगिरि वांञ्छति आशिषेषा ॥९॥

श्री मनोहरनाथजीके अखाड़ेके, जो जो वरिष्ठ श्रीपीठाधीश्वर श्री महन्त हुये हैं उन सभीको हाथ जोड़ कर हृदयमें चिन्तन करता हुं तथा ज्ञान रूपी आशीर्वादकी इच्छा करता हूं सो आप देने के योग्य हैं ॥९॥

हृदयेस्थिता यस्य गुरुकृपा स्यात
भय भक्ति भावात्परिपूर्णमस्ति
उदयात् तमोऽलम् रवेर्यथास्यात्
तज्ज्ञान दानाय मह्यं ददातु ॥१०॥

जिसका हृदय भय भक्ति तथा भाव से परिपूर्ण गुरु कृपा को प्राप्त कर लेता है उसके हृदय में जैसे सूर्योदय से अन्धकार दस हो जाता है वैसे ज्ञान के उदय से अज्ञान नाश हो जाता है वहज्ञान जगत में परंपरागत लुटाने के लिये को देनेकी कृपा करे। ॥१०॥

प्रस्थान

जगत में छोड़ो सबकी आस,
चलोरे मन गुरु चरणनके पास ॥ टेक ॥
जासु चरण रजभूरि . भोग मय
सुन्दर सुखद विलास।
जासु कृपा आनन्द विषयमें
कण कण करत निवास ॥ १ ॥
चलोरे मन गुरु चरणनकेपास ॥

जिन चरणन को हरि हर ध्यावत,
ब्रह्मा वेद पुराणहु गावत।
शारद शेष सुरासुर नारद,
गुरु चरणन इतिहास चलोरे मन ॥२॥
जासु चरण रज अमियमूरि है
त्रिभुवन धन धूनी कि धूरिहै।
जिनकी वाणी ज्ञान सुधारस
जिनसे यमहुको त्रास ॥ चलोरे मन ॥ ३ ॥

जिन चरणन की चरणपादुका
अन्तर मल गुण जान तासु ॥
भागत विनहिं प्रयास हृदयसे
प्रकटत दिव्य प्रकाश ॥ चलोरे मन ॥ ४ ॥
यह संसार महा भय दायक
सच्चे को मिथ्या करि गायक।
झुठ कलंक लगाय सत्यको,
फिर कर ठाढ़ो हास ॥ चलोरे मन ॥ ५ ॥
गिरि रघुनाथ यतन कुछ करले,
जीते सफल देह नर करले।
अमृत फल या विषयानल ले,
दोनो तेरे साथ ॥
चलोरे मन गुरु चरणन के पास ॥६ ॥

गुरू परंपरा

गुरुचरण स्त्रोम

गुरुराज मनोहर ज्ञान निधे
अभयङ्कर शंकर बेद विधे
भवतारण कारण नाथ पदम्
रघुनाथगिरिः भवतां शरणम् ॥ १ ॥
पद शम्भु गिरे पुनि देवगिरे
पुनि भीमगिरे बलरामगिरे।

मनसा वचसा पद. ●जगिरे.
रघुनाथगिरिः भवतां शरणम् ॥ २ ॥
●दकञ्जसुमेदगिरे सुखदम्,
सुखदं चरणाम्बुज बालगिरे।
●दयादरिमर्दन ज्ञान समम्,
रघुनाथगिरिः भवतां शरणम् ॥ ३ ॥
प्रणमामि उदेगिरि पादरजम्,
आत्मागिरि पादविहारिगिरे।
मथुरागिरि मंगलनाथ य●
रघुनाथगिरिः भवतां शरणम् ॥ ४ ॥
बलबुद्धि निधे बलवन्तगिरे,
पद पंकज गन्ध सुधामृतदम्।
सुखदं वरदं गुरुराज पद●,
रघुनाथगिरिः भवतां शरणम् ॥ ५ ॥

शान्ति पाठ मंगला चरण

रुको वाणी मेरी, मन विच गिरा में मन रुको।
प्रभू आओ मेरे, निकट प्रगटो हे मत लुको ॥
तुम्हीं तो देते हो, निगम पदका ज्ञान हमको।
न छोड़ो शास्त्रों के, विषय धन हे ज्ञान जनको ॥१॥
हमारी है क्रोड़ा, दिवस निसिवेदान्त वन में।
करो रक्षा मेरी, मम मन रमे सत्य प्रगमें ॥

गुरूकी भी रक्षा, उभय जन पालो पतन से ।
दया की दो भिक्षा, जनम गति रोको भ्रमण से ॥२॥

नमस्ते ॐ मेरा, परम पर संपूर्ण पद ॐ ।
यहां आके पाते, तुम जगत ॐ जीवज्वर को ।
वहां भी हो पूरे, इतहु लभते पूर्ण पद को ।
निजी पूरा लेलो, बचत तबभी पूर्ण तुमहो ॥३॥
गुरूकी शिष्योंकी, जगतपति रक्षा संग करो ।
हमारा दोनोंका, भरण प्रभु सम्मेलन भरो ॥
करें एकी साथे उभय हम सामर्थ्य सबरो ।
प्रकाशो विद्या भी उभय मम इर्षा दुःख हरो ॥४॥

गिरा अंगो प्राणों, सह नयन श्रोत्रोंबल तथा ।
सभी इन्द्री मेरी, सबल कर मेटो मम व्यथा ॥
सभी तो हो आपी. नपद गायें नित कथा ।
वही मेरी क्रीड़ा, दुखित जन होवें नहि यथा ॥५॥
पढ़ूं खेलूं कूदूं पर समझनी भी यह क्रिया ।
असारे संसारे, जनम हमने क्यों यह लिया ॥
सभी मेरे प्यारे वचन मन देखो निज धिया ।
विचारों के खारे, नहि जगत सेवा तक पिया ॥६॥
हमें नेता का भी, पद ग्रहण हो संशय नहीं ।
प्रजा ही है राजा, अलसगति भूलो मत कहीं ॥

अज्ञाने लोगोंकी, हृदय गति नेता बन नहीं
बना नेता तोभी जगत हितकारी वह नहीं ॥७॥
हमी हैं राजा के, तनय हम को है यह खुशी ।
नहीं मेरे राजा, गुण कुवर हैं ग्लानि उमसी ॥
अहो, मेरी बुद्धिः विषय रमणी श्वान हड़ सी ।
मुझे बुद्धिः दीजै, विमल यशदा देव गुरू जी ॥८॥
सुनू मैं कल्यानी जगतहित मानी शुभ गिरा ।
दिशाओं में देखूं नयन निज से मंगल क्रिया ॥
उचारें मीठे ही वचन सुख दाता जन प्रिया ।
सची स्वामी पूषन् गरुड़ रघुनाथायुहितिया ॥९॥

दिग्विजय

सुनो अटल सिद्धान्त शान्ति प्रिय बौद्ध कालमें जब लोपा ।
नाना वाद हुये भारतमें द्वैतानल अतिशय कोपा ॥१॥
हाहाकार मचा जनतामें अन्तर सबका था रोता ।
हिला शिखर कैलास उठा था जाग नेत्र शिवका सोता ॥२॥
आये थे इस धरा धाम पर जनदुःख हरने त्रिपुरारी ।
यतियों को अेकत्रित करके संघ बनाये सुखकारी ॥३॥
लुप्त अटल सिद्धान्त देख दिनकर व अग्निकी साक्षीमें ।
आवाहन सिद्धान्त अटल था किया सार सम काशीमें ॥४॥

सारनाथ पद प्राप्त शिवापति काशीमें शोभा भारी ।
यती संघ चतुरंङ्ग तीन आशाम्बर एक सूत्र धारी ॥५॥

तज एकान्त देश हित यतियोंने ये संघ बनाये थे ।
जगद्गुरू शंकर सह सम्मत दिशा विजय हित धाये थे ॥६॥

अंग वंग कोचिन कर्नाटक महाराष्ट्र गुजरातादी ।
कच्छ काठियावाड़ सिन्ध पंजाब हिन्द उत्तरवादी ॥७॥

मरु मालव कश्मीरासामी नैपालादि दिशाचारी ।
तीन बार दिग्विजय किया लेकर नागा दल अति भारी ॥८॥

मिटा द्वैष अद्वैत एकता कल्पवृक्षकी छायामें ।
शान्तिसुधा रस पिला सभी को मग्न हुए निज कायामें ॥९॥

कैलास शिखर शंकर पहुंचे सिद्धान्त अटल ध्वज लहराकर ।
आ सिन्धु मेरु गिरि तक जनता आनन्दित सच्चा सुख पाकर ॥१०॥

सिद्धान्त जिन्होंका देख विश्वके पण्डित भी नत हो जाऐं ।
उनकी सुकीर्ति रघुनाथ गिरिः फिर लघुमतिसे कैसे गाये ॥११॥

फिर आज वही अवसर आया हर हरमें जागो त्रिपुरारि ।
रघुनाथगिरि यह भव तरणी तुझ बिन नहि और सके तारी॥१२॥

सुधा सिन्धुकी जल तरंग सम हृदय हृदय में जाग उठो ।
जय प्रलयंकर अटल प्रेम हे जन गण मन मन व्याप उठो ॥१३॥

वंदन

वन्देऽहं तं सुचैतन्यं येन व्याप्तमिदं जगत्
कर्तारं मंगलं नित्यं हर्तारं विघ्न मूल तः ॥ १

नमो गुरूके चरणारविन्द, जो सार रूप सब में रहे हैं ।
अणोरणीयान् महतो महीयान्, चैतन्य भावे गुरुको नमस्ते । २

सूक्ष्माऽतिविद्या दुष्प्राप्य जोइ, जाकीकृपासे सुगमाति होई ।
मिली युगोंकी धनराशि खोई, आचार्य इश बदवेद टोई ॥ ३

वीणां वरधारिणि परम उदारिणि भवदुःख हारिणि ज्ञानरते
वाणी वर दायिनि गति अनपायिनि सन्तन वेद पुराण मते ।
आशावश ऐही मतिगति देही परहिन पदअज्ञान गते
विद्या वरदेवी सन्तन सेवी गिरिरघुनाथ प्रणामहुतें ॥ ४

जै जै गणनायक मति वरदायक लैशायक मम विघ्न हरो
जे जै अघनाशन जै मूसासन मेरे अवगुण चित न धरो ।
जै ऋद्धि सिद्धि स्वामी अन्तरयामी चेतन चेरहिं चतुर करो
जै षडमुख भ्राता जन सुखदाता मेरे नित सत्तत्व भरो ॥ ५

श्री जगदीशजी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ॥
भक्त जनों के संकट, क्षणमें दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसै मनका ॥प्रभु॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥प्रभु॥
तुम बिन और न दूजा, आस करुं जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अंन्तर्यामी ॥प्रभु॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥प्रभु॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥प्रभु॥
किस विधि मिलूं दयामय ! मैं तुमको कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥प्रभु॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥प्रभु॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ॐ॥

श्री बापेश्वर तीर्थकी महत्ता

ऐतिहासिक तीर्थ बापेश्वर करमसद गाममां ।
पारवती परिवार सहशिव वास करता धाममां ॥
भावथी भयथी भगत भगवान शिवने पूजता ।
जेमना दर्शन करी सहुद्वेष पापो ध्रूजतां ॥
आस सहु भक्तोतणी उमियामहेश्वर पूरता ।
रीझता भगवान निरखी भाव भीनी सूरता ॥
फूल मंडळीओ तणी भक्तो उतारे आरती ।
पापरुपी जे पतंगा ते बधां संहारती ॥
संस्कार हिन्दु जातिमां जन्मी अद्विज पाम्यां हता ।
सरदार वल्लभ भारतीमां शंम्भु मन भाव्यां हता ॥
श्री सोमनाथ प्रभास वल्लभ किर्ति थइ व्यापक थयां ।
ते धन्य छे. मा बाप जेना पुत्र कैलाशे गयां ॥
विठ्ठलतणी ते बुद्धिमत्ता सूं अजाणी थइ सके ।
तीर्थ बापेश्वर महत्ता केम छानी रहि सके ॥

लेखक० रघुनाथगिरि
(लुणावाड़ा अखाड़ा)

प्राप्ति स्थान :-

श्री बापेश्वर महादेव

करमसद. ता. आणंद. जी. खेडा.
(गुजरात)

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥

श्री शंकर प्रिन्टिंग प्रेस, करमसद.